ISSN 3048-9547 (Print)

विद्वत वाणी
ESTD. 2024

विचार, विस्तार और नवाचार

(त्रैमासिक)

विद्वत वाणी

Edition (July - September 2025)

Volume : 2 Issue : 1

An International Peer Reviewed and Refereed Quarterly Hindi Research Journal

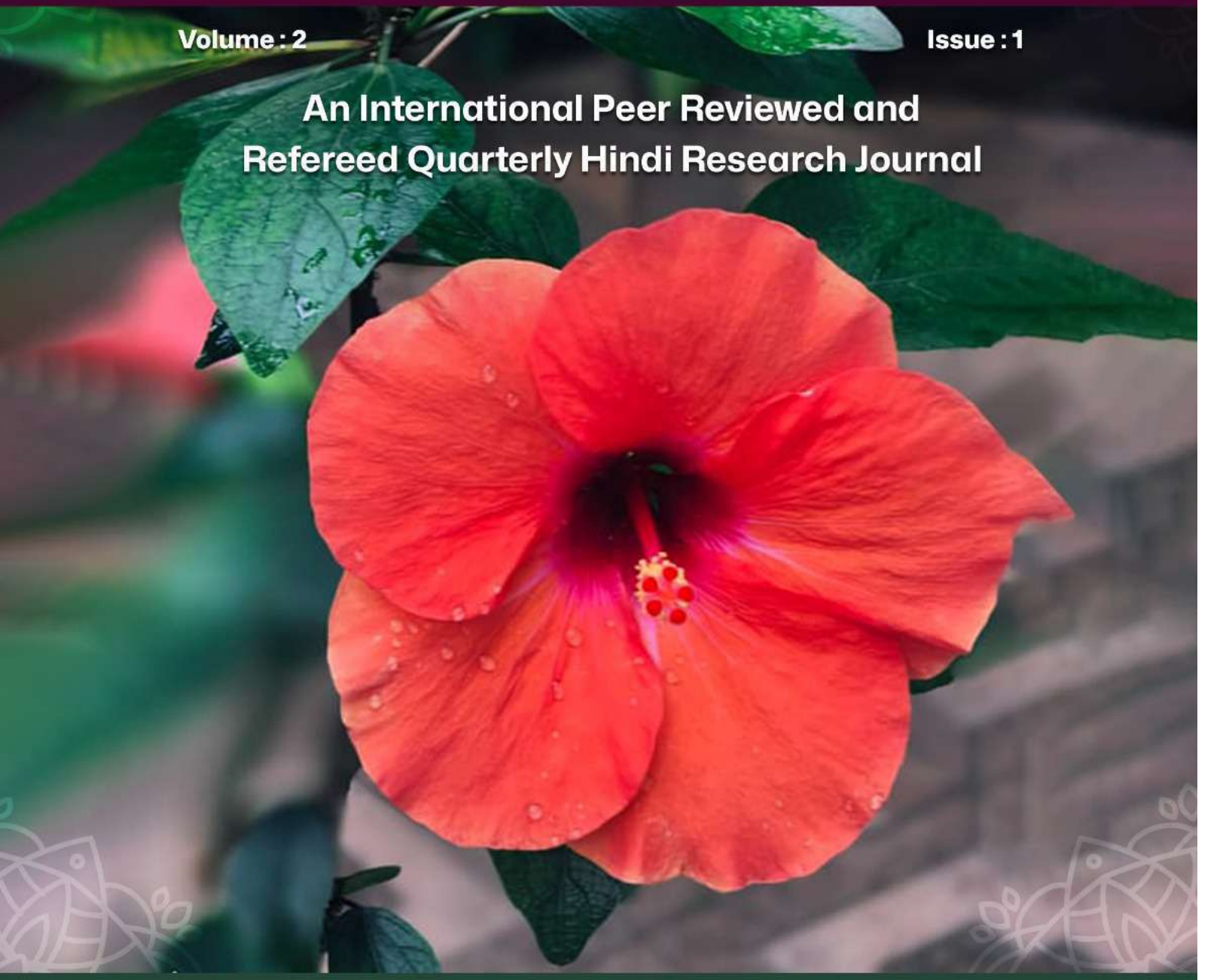

NITI Aayog
DARPAN ID: TN/2025/0790079

Published by :
(Research and Development Division)
Sharada Saptarishi Foundation (NGO) (Chennai, Tamilnadu),
(A Registered organization with the Ministry of Corporate Affairs, Govt of India)

त्रैमासिक ISSN : 3048-9547 (Print)

विद्वत वाणी

(विचार, विस्तार और नवाचार)

मूल्यः 100/- रुपये मात्र

प्रथम वर्ष - 2024
खण्ड - 2, अंक - 1
(जुलाई से सितंबर - 2025)
Volume - 2 - 2025, Issue - 1
(July to September 2025)
Starting Year - 2024

An International Peer-Reviewed Quarterly Hindi Research Journal

Our Mentors

1 Mr. Ashok Upreti - Former Indian Forest Service Officer,
Retd. Principal Chief Conservator of Forests and State Head -
(Forest Department Tamilnadu),
Former Chairman - Research Advisory Committee of Tamilnadu.

2 Dr. Malini Pande - Professor and Additional Registrar,
Director: Internal Quality Assurance Cell,
Director: Center for Online Programs,
Director: Academic Staff College, Special Officer - New Education Policy,
Dr. MGR Educational : Research Institute, Deemed to be University,
Chennai.

3 Dr. Davinder Singh Boha - Dist. Language Officer, (Retd.),
S.A.S. Nagar, Dist Mohali, Punjab

आवरण पृष्ठ साभार - डॉ. चंद्रिका चौधरी, सरायपाली, महासमुंद, छत्तीसगढ़

Published by:

(Research and Development Division)

Sharada Saptarishi Foundation (NGO)

(A Registered Organization with the Ministry of Corporate Affairs, Govt.of India)

Address for Correspondence:

Plot No 2/463, Shri Balaji Nagar (Main),

Periyapalayam High Road, Thiruninravur, Dist-Thiruvallur, Chennai-602025, Tamilnadu

अनुक्रमणिका

Table of Contents

1. **हृदयेश कृत 'चार दरवेश' उपन्यास में वृद्धावस्था की संवेदनहीनता का चित्रण** 11
   बी. कमला, चेन्नई

2. **अनामिका के साहित्य में स्त्री-संघर्ष और मुक्ति का स्वर** 17
   हरीश कुमार धाकड़, बांसवाड़ा

3. **हिंदी सिनेमा में प्रेमचंद : साहित्य और समाज का दृश्यात्मक पुनर्पाठ** 22
   डॉ. रामदास नारायण तोंडे, वसई, जिला-पालघर

4. **छत्तीसगढ़ी अनुवाद परंपरा और लोकजीवन का वैश्विक परिप्रेक्ष्य** 31
   डॉ. सरोजनी डडसेना, बिर्रा, जिला- जांजगीर-चाम्पा, छत्तीसगढ़

5. **मोरवाल के उपन्यासों में गांधीवादी आदर्श और आज की राजनीति** 38
   डॉ. सतीश कुमार श्रीवास्तव, कोयंबत्तूर

6. **हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय काव्य-धारा** 43
   डॉ. अलका शर्मा बोस, पंचकूला, हरियाणा

7. **निर्मल वर्मा की कथा-दृष्टि में विस्थापन, पहचान और सांस्कृतिक आत्म-प्रत्यावर्तन** 49
   एस. रजनी, तांबरम, चेन्नई

विद्वत वाणी
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका
ISSN : 3048-9547 (Print)
Volume - 2 - 2025, Issue - 1

"VIDWAT VANI"
Quarterly International Peer Reviwed Refereed Journal
Starting Year - 2024
July to September - 2025

हृदयेश कृत 'चार दरवेश' उपन्यास में वृद्धावस्था की संवेदनहीनता का चित्रण

बी. कमला

Ph.D. शोधार्थी, (हिंदी विभाग)
वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी (विस्टास)
चेन्नई-600117

शोध निर्देशक

डॉ. अनुराधा पाकालापटि
असिस्टेंट प्रोफेसर
(हिंदी विभाग)
वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी (विस्टास)
चेन्नई-600117

शोध सारांश

हृदयेश द्वारा रचित 'चार दरवेश' उपन्यास वृद्धावस्था की सामाजिक उपेक्षा, मानसिक पीड़ा और आर्थिक असुरक्षा को अत्यंत मार्मिकता के साथ प्रस्तुत करता है। उपन्यास के चारों वृद्ध पात्र- रामप्रसाद गुप्ता, दिलीपचंद, शिवशंकर और चिंताहरण, जीवन के उत्तरार्ध में गहन अकेलेपन और आत्मसम्मान के क्षरण से जूझते हैं। रामप्रसाद गुप्ता पारिवारिक अवहेलना का शिकार होकर असहाय मृत्यु को प्राप्त होते हैं, जबकि दिलीपचंद सामाजिक संबंधों के अभाव और आत्मिक रिक्तता के कारण जीवन समाप्त करने का विकल्प चुनते हैं। शिवशंकर अपने पुत्र के स्वार्थी रवैये के चलते आत्मनिर्भरता और पहचान दोनों खो बैठते हैं। वहीं चिंताहरण, अपने ही परिवार में उपेक्षित और अलग-थलग पड़ जाते हैं और एक संकटपूर्ण स्थिति में भी उन्हें आत्मीय सहयोग नहीं मिल पाता।

उपन्यास, वृद्धजन के अनुभवों, संवेदनाओं और असुरक्षाओं की पड़ताल करते हुए इस वर्ग के अस्तित्व-संकट को रेखांकित करता है। हृदयेश ने इन पात्रों के माध्यम से न केवल पारिवारिक संबंधों की संवेदनहीनता को उजागर किया है, बल्कि समाज में वृद्धजनों की स्थिति पर गंभीर विमर्श भी प्रस्तुत किया है। 'चार दरवेश' केवल एक कथा नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ का चित्रण है, जो पाठकों को सहानुभूति, आत्ममंथन और उत्तरदायित्व का बोध कराता है।

बीज शब्द

1. वृद्धावस्था 2. सामाजिक उपेक्षा 3. पारिवारिक संबंध
4. मानसिक अकेलापन 5. आर्थिक असुरक्षा 6. अस्तित्व संकट
7. आत्मसम्मान 8. बुज़ुर्गों का मनोविज्ञान 9. संवेदनहीनता

मूल शोध

दिल्ली की 'आउटलुक' हिंदी पत्रिका में प्रकाशित एक हालिया सर्वेक्षण के अनुसार, वर्तमान भारत में वृद्धजन अनेक प्रकार के उत्पीड़न का सामना कर रहे हैं, जिनमें सबसे अधिक प्रचलित असम्मान (57%), उपेक्षा (37%) और गाली-गलौज

(36%) जैसे व्यवहार शामिल हैं। **"वर्तमान समय में वृद्धों के उत्पीड़न के कई तरीके हैं- असम्मान, मारपीट, गाली-गलौज, आर्थिक उत्पीड़न, अनचाहा या बलपूर्वक यौन संपर्क और उपेक्षा आदि। इन सभी उत्पीड़नों को जाँचा जाए तो हर एक खण्ड में सौ प्रतिशत में से असम्मान-57%, मारपीट-30%, गाली-गलौज-36%, आर्थिक उत्पीड़न-27%, अनचाहा या बलपूर्वक यौन संपर्क-9%, उपेक्षा-37% और वृद्ध उत्पीड़न की जानकारी नहीं-19% मिलते हैं।"**[1]

मानव-जीवन चक्र की अंतिम अवस्था वृद्धावस्था मानी जाती है, जिसे सामान्यतः दो चरणों में वर्गीकृत किया जाता है। 60 से 75 वर्ष की आयु को 'युवा वृद्धावस्था' और 75 वर्ष के बाद की आयु को 'वृद्धावस्था' की श्रेणी में रखा जाता है। 'वृद्ध' शब्द का तात्पर्य है परिपक्वता की उस अवस्था से, जहाँ व्यक्ति जैविक, मानसिक एवं सामाजिक रूप से अनुभवसंपन्न तथा पूर्णतः विकसित होता है।

'अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेवनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्॥'[2]

अर्थात् **"जो लोग नम्र विनम्र, सम्मान और प्रतिदिन बड़ों की सेवा करते हैं, वे लंबे जीवन, ज्ञान, प्रसिद्धि और शक्ति में वृद्धि के धनी होते हैं।"**[3] यह श्लोक मनुस्मृति से उद्धृत है, जिसमें मनु यह उपदेश देते हैं कि दैनिक जीवन में हमारा व्यवहार विनम्र होना चाहिए तथा वृद्धजनों के प्रति सेवा, सम्मान, सहयोग और उनके अनुभवों से लाभ लेना हमारी आयु, ज्ञान, यश और शक्ति- इन चारों को विकसित करने में सहायक होता है। अतः वृद्धों की सेवा न केवल नैतिक कर्तव्य है, बल्कि जीवन विकास का मार्ग भी है। भारतीय परंपरा में वृद्धों को 'घर का देवता' कहा गया है। जैसे सूर्य का उदय और अस्त मानव जीवन के विभिन्न चरणों का प्रतीक है, वैसे ही शैशव, युवावस्था और वृद्धावस्था जीवन के क्रमिक पड़ाव हैं। वृद्धावस्था को जीवन की संध्या की संज्ञा इसीलिए दी गई है, क्योंकि इस काल में व्यक्ति शारीरिक रूप से कमज़ोर होते हुए भी अनुभव और विवेक में परिपक्व होता है। जब कोई स्वयं को वृद्ध मानने लगता है, तब वह मानसिक रूप से असुरक्षा और निर्बलता का अनुभव करने लगता है।

वृद्धावस्था में व्यक्ति प्रायः संबंधों के स्तर पर किसी न किसी प्रकार की पीड़ा से गुज़रता है। हर वृद्ध की समस्याएँ भिन्न होती हैं। कुछ शारीरिक कष्ट से जूझते हैं, तो कुछ आर्थिक संकटों का सामना करते हैं। इन दोनों स्थितियों का गहरा प्रभाव उनकी मानसिक स्थिति पर पड़ता है। प्रायः वृद्धजन अपने जीवन के अंतिम पड़ाव को अपने बच्चों और पोता-पोतियों के साथ बिताने की अपेक्षा रखते हैं, यही उनके जीवन की सबसे बड़ी संतुष्टि होती है। किंतु यदि इन संबंधों में किसी भी प्रकार की दरार उत्पन्न होती है, तो उनका मानसिक संतुलन अस्थिर हो जाता है।

हृदयेश द्वारा रचित 'चार दरवेश' उपन्यास इसी सामाजिक और भावनात्मक यथार्थ को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से चित्रित करता है। उपन्यास में चार वृद्ध पात्र- रामप्रसाद गुप्ता, दिलीपचंद, शिवशंकर और चिंताहरण शर्मा- अपनी-अपनी व्यथाओं और संघर्षों को साझा करते हुए जीवन के कटु यथार्थ से परिचय कराते हैं। ये सभी पात्र एक संध्या समय एक छोटे पुल पर बैठकर अपने अनुभवों और पीड़ाओं को एक-दूसरे के साथ बाँटते हैं, जो उनके टूटते संबंधों और सामाजिक अकेलेपन की मार्मिक अभिव्यक्ति बन जाता है।

रामप्रसाद गुप्ता का त्रासद वृद्ध जीवन

रामप्रसाद गुप्ता की पत्नी का निधन हो जाता है, जिसके पश्चात उनके दामाद का व्यवहार उनके प्रति दिन-प्रतिदिन अपमानजनक होता चला जाता है। पत्नी की मृत्यु के बाद रामप्रसाद न केवल भावनात्मक रूप से अकेले पड़ जाते हैं, बल्कि पारिवारिक उपेक्षा और तिरस्कार के भी शिकार बनते हैं।

एक दिन जब उनके कमरे का बल्ब फ्यूज़ हो जाता

है, तो वे यह बात अपनी बेटी से साझा करते हैं। बेटी जब अपने पति से बल्ब बदलने का अनुरोध करती है, तो दामाद आक्रोश और अवमानना से भरे शब्दों में प्रतिक्रिया देता है-**"तेरा बाप हरदम ततैया मिर्च बना रहता है। शिकवा-गिला के अलावा कुछ जानता नहीं। वह भी तो घर से बाहर निकलता है। साँझ को जब बैठकबाजी से लौटता है तब किसी बिजली वाली दुकान से क्यों नहीं बल्ब ले लेता है? सो क्यों? अपनी टेंट से दस-बारह रुपये जो ढीले करने पड़ेंगे। बुड्ढा चालाक कौवा है। यह चालाक कौवा अब अपने पैसों से खुद बल्ब ले आएगा।"**[4]

इस अपमानजनक व्यवहार से रामप्रसाद मानसिक रूप से व्यथित हो जाते हैं और पूरी रात नींद नहीं ले पाते। उनका मन बेचैनी और असुरक्षा की भावना से भर जाता है। उसी रात वे अपनी दिवंगत पत्नी की तस्वीर को हाथ में लेकर अपनी पीड़ा व्यक्त करते हैं-**"तुम चली गयीं, मैं बहुत अकेला हो गया हूँ। मैं अपने आपको बहुत असुरक्षित महसूस करता हूँ, तुम थीं तो हिम्मत बनी रहती थी। किये गये ग़लत को भी बरदाश्त कर लेता था। ...रोते हुए- समझ में नहीं आता करूँ मैं क्या? तुम थीं तो मुझे इतनी घबराहट नहीं होती थी। इतनी बेचैनी मझे नहीं सताती थी। ...मैं तुम्हारा न होना बहुत महसूस कर रहा हूँ। तुमको मुझे छोड़कर जाना नहीं था। हम दोनों को साथ-साथ मरना था।"**[5]

इस मानसिक और भावनात्मक उत्पीड़न के बावजूद रामप्रसाद गुप्ता उसी घर में बेटी और दामाद के साथ एक उपेक्षित और विरोधाभासी अस्तित्व में जीते रहते हैं। एक दिन उन्हें एक कुत्ते ने काट लिया। अस्पताल में डॉक्टर ने रेबीज़ का टीका लगाने की सलाह दी, जिसकी लागत दो हज़ार रुपये थी। किंतु बेटी और दामाद की कंजूसी और उदासीनता के कारण उचित उपचार नहीं हो सका, जिससे उनकी मृत्यु अत्यंत पीड़ादायक और दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थिति में हुई।

दिलीपचंद की अंतर्व्यथा : अकेलेपन का बोझ

'चार दरवेश' उपन्यास का दूसरा प्रमुख वृद्ध पात्र दिलीपचंद एक ज़मींदार परिवार से संबंध रखते हैं। वे शिक्षित थे और सप्लाई इंस्पेक्टर के पद से सेवानिवृत्त हुए थे। साहित्यिक अभिरुचि रखने वाले दिलीपचंद, पत्र-पत्रिकाओं के नियमित पाठक थे और सामाजिक-राजनीतिक विषयों की पूर्ण जानकारी रखते थे। हालाँकि विवाह की संभावनाएँ उनके जीवन में आईं, लेकिन परिस्थितियों के कारण वे आजीवन अविवाहित ही रह गए। सरल स्वभाव के कारण वे लोगों पर सहजता से विश्वास कर बैठते थे, जिससे उन्हें कई बार धोखे भी झेलने पड़े, जैसे एक दूर के रिश्तेदार द्वारा गारंटी के नाम पर उन्हें ठगा जाना।

अपने पिता की संपत्ति में से गाँव की ज़मीन बेचकर उन्होंने एक दुकान खरीदी, जिसे उन्होंने राष्ट्रवादी भावना से प्रेरित होकर 'सुभाष मार्केट' नाम दिया। यह बाज़ार धीरे-धीरे व्यावसायिक रूप से समृद्ध हुआ, जहाँ कई दुकानदारों ने अपनी दुकानों को विस्तार भी दिया। दिलीपचंद प्रतिदिन सुबह उसी बाज़ार की ओर पैदल जाया करते थे, जिसे वे अपने जीवन की एकमात्र सामाजिक गतिविधि मानते थे।

उनका व्यवहार अत्यंत विनम्र और संयमित था। दूसरे दुकान वाले वर्षों से दुकानों का किराया बढ़ा रहे थे, किंतु दिलीपचंद ने कभी अपनी दुकानों का किराया नहीं बढ़ाया- न ही उन्होंने किसी से कोई शिकायत की। वे दूसरों को कष्ट में नहीं डालना चाहते थे और आत्मसम्मान के साथ जीने में विश्वास रखते थे। लेकिन इस शांत और आत्मनिवृत्त जीवन के पीछे गहन अकेलापन छिपा हुआ था। जब वे वृद्धजनों के प्रति हो रहे अत्याचारों की खबरें पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ते, तो उनका मन गहरे अवसाद और भय से भर उठता।

समाज में स्वयं को अप्रासंगिक और असंबद्ध मानने की भावना धीरे-धीरे उनके भीतर घर करने लगी। आत्मीय

संबंधों की अनुपस्थिति और सामाजिक कटाव की पीड़ा उन्हें भीतर ही भीतर तोड़ती गई। अंततः अकेलेपन और मानसिक संताप से ग्रसित होकर वे आत्महत्या जैसा दुखद निर्णय लेने को विवश हो जाते हैं।

बेपहचानी दुनिया में खोया शिवशंकर

हृदयेश कृत 'चार दरवेश' उपन्यास में तीसरे वृद्ध पात्र के रूप में प्रस्तुत शिवशंकर एक शिक्षित और उच्च वर्गीय व्यक्ति हैं, जिन्होंने इंटर कॉलेज में बड़े बाबू के रूप में अपनी सेवाएँ दी थीं। सेवानिवृत्त होने के पश्चात उन्होंने कुछ समय तक एक होम्योपैथिक औषधालय का संचालन किया, जहाँ वे प्रतिदिन तीन घंटे निःशुल्क रोगियों का उपचार करते थे। यह सेवा उनके जीवन की सार्थकता बन गई थी।

शिवशंकर और उनकी पत्नी दोनों ही वृद्धावस्था के अकेलेपन से जूझ रहे थे। उनकी आकांक्षा थी कि वे अपने पोते-पोतियों के साथ समय बिता सकें, परंतु उनका पुत्र पुनीत और बहू अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के बहाने उनके साथ गाँव में रहने से इनकार कर देते हैं। पुत्र पुनीत ने उन्हें परामर्श दिया कि वे निःशुल्क इलाज बंद कर दें, किंतु शिवशंकर ने इस पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उन्हें अपने कर्म में ही सच्ची संतुष्टि मिलती थी। इस असहमति से क्षुब्ध होकर पुनीत इलाहाबाद चला जाता है।

इलाहाबाद में पुनीत एक स्कूल की इमारत बनवा रहा था। अपने स्वार्थवश वह पिता को अपने साथ ले आता है, जिससे उन्हें काम में सहयोग मिल सके। शिवशंकर का पुश्तैनी घर बेच दिया जाता है और उसकी आय से इलाहाबाद में एक नया प्लॉट खरीदा जाता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि पुत्र पुनीत अपने हितों की पूर्ति हेतु किसी भी सीमा तक जा सकता है। वृद्ध शिवशंकर अब पूरी तरह पुत्र पर निर्भर हो जाते हैं। उन्हें यह एहसास होता है कि बेटे के पास आकर उन्होंने एक गंभीर भूल की है। उनका सपना पोते-पोतियों के साथ जीवन बिताने का था, लेकिन वास्तविकता पूर्णतः निराशाजनक रही।

शिवशंकर भीतर ही भीतर असहायता और भावनात्मक संघर्ष से ग्रसित रहते हैं, लेकिन कभी भी अपने दुःखों को किसी के साथ साझा नहीं करते। वे अपने पुराने मित्र चिंताहरण से मिलने की इच्छा रखते हैं, लेकिन समयाभाव के कारण पत्र लिखते हैं। इस संबंध में उपन्यास में वर्णन आता है-**"एक पत्र में उन्होंने लिखा कि दो बार उनको सपने में रामप्रसाद गुप्ता दिखाई दिये। सपने में गुप्ताजी कह रहे थे कि उन्होंने बेटी-दामाद को अपने घर में रखकर ग़लती की। भाई शिवशंकर वही ग़लती आपने अपना घर बेचकर बेटे के पास रहना स्वीकार कर ली। पत्र डालकर उनको अपनी यह चूक महसूस हुई कि उन्होंने सपने वाली बात लिख दी। अपने कष्टों, पछतावों का ज़िक्र वह पत्रों में नहीं करते थे। हर पत्र में लिखते थे कि वह ठीक हैं। उन सबसे मिलने का अवसर पाते ही वह वहाँ ज़रूर आएँगे। इस पत्र में भी सपने की बात के साथ उन्होंने ये दोनों बातें लिखी थीं। वे सब एक कुनबा थे, यह बात भी इस पत्र में लिखी थी।"**[6]

शिवशंकर को अपने पुराने मित्र रामप्रसाद गुप्ता से पत्र की प्रतीक्षा रहती है। वे फोन पर भी संपर्क करने की कोशिश करते हैं, लेकिन पहले 'स्विच ऑफ' और फिर 'दिस नम्बर डज़ नॉट एक्जिस्ट' जैसी सूचना मिलती है। यह तकनीकी संदेश उनके लिए एक गहरी यथार्थपरक प्रतीक बन जाता है कि अब रामप्रसाद का इस संसार में कोई अस्तित्व नहीं रहा।

कुछ समय पश्चात यही स्थिति शिवशंकर के साथ भी घटती है। जब इलाहाबाद में रहते हुए उनके संपर्क में आने की कोई संभावना नहीं रह जाती और उनका भी फोन 'डज़ नॉट एक्जिस्ट' बताने लगता है- यह इस बात का सूचक बन जाता है कि वे भी इस संसार से विलुप्त हो गए हैं, एक ऐसी दुनिया में खो गए हैं, जहाँ कोई पहचान शेष नहीं रही।

एक ही छत के नीचे अजनबी-चिंताहरण

विवेचित उपन्यास 'चार दरवेश' में चौथे वृद्ध पात्र के रूप में चिंताहरण का चरित्र एक मुखर और स्पष्टवादी व्यक्तित्व के रूप में सामने आता है। अपने बड़बोले स्वभाव के कारण वे अक्सर घर के अन्य सदस्यों को संवाद की पर्याप्त स्वतंत्रता नहीं दे पाते थे, जिससे पारिवारिक समीकरणों में तनाव उत्पन्न हो जाता है। यही व्यवहार उन्हें अपने ही घर में अपरिचित और अलग-थलग बना देता है।

एक घटना के दौरान चिंताहरण का अपहरण हो जाता है। अपहरणकर्ताओं से उन्हें छुड़ाने के लिए उनके बेटे ने त्वरित रूप से धन का प्रबंध किया, परंतु इस गंभीर प्रसंग के बाद भी उनसे कोई चर्चा नहीं की गई। यह उदासीनता चिंताहरण के लिए मानसिक रूप से पीड़ादायक थी। उनके और पुत्र रघुनाथ के बीच संबंध इतने औपचारिक और ठंडे हो चुके थे कि वे अपने अपमान और उपेक्षा को शब्दों में भी नहीं ढाल सके। इस प्रसंग का उल्लेख उपन्यास में इस प्रकार है-**"रघुनाथ ने इतनी जल्द इतनी बड़ी राशि का प्रबंध चुपचाप कर लिया, चिंताहरण को आश्चर्य हुआ था। बेटे ने प्रबंधन के संबंध में उनसे कोई सलाह-मशविरा नहीं किया था। बेटा कारीगरों से कालीन तैयार करवा कर उनका देश की इस मालिक की मानी हुई दो एक मंडियों में भेजा करता था और उसका यह धन्धा ठीक चल रहा था। उसके पास पैसा है, यह वह जानते थे, मगर इतना होगा, इसकी जानकारी नहीं थी, पक्की तो नहीं थी।"**[7]

यद्यपि वे एक ही घर में अपने पुत्र और बहू के साथ रहते थे, परंतु रिश्तों की गर्माहट उनके जीवन से गायब हो चुकी थी। उपन्यासकार हृदयेश ने इस दूरी को अत्यंत सटीक रूप में वर्णित किया है-**"दोनों की स्थिति के सुई के तरह एक दूसरे से जुड़े होने के बावजूद फासला यानी दूरी बनकर चलते थे और बीच में कभी-कभी मिलते भी थे, तो वह मिलन भी न के बराबर थे।"**[8]

चिंताहरण कभी अपने बेटे या बहू से भयभीत नहीं थे। वे स्वतंत्र स्वभाव के व्यक्ति थे और वृद्धावस्था में भी आत्मनिर्भर बने रहे। उनका स्पष्ट मानना था कि किसी पर आश्रित होना, आत्मगौरव को समाप्त करने के समान है। वे एक चीनी मिल में शुगर केमिस्ट के रूप में कार्यरत थे, लेकिन सेवानिवृत्ति से कुछ वर्ष पूर्व ही मिल बंद हो जाने के कारण उन्हें अनिवार्य रूप से सेवा छोड़नी पड़ी। ग्रेच्युटी के साथ-साथ उन्हें अन्य आर्थिक मुआवज़ा मिला, जिसे उन्होंने एक विश्वसनीय पेंशन योजना में निवेश कर दिया।

बेटा अतुल अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हुए नियमित रूप से माता-पिता को पैसे भेजता था, जिससे उनकी आवश्यकताएँ पूरी हो जाती थीं। चिंताहरण की पत्नी भी परिवार के अंदरूनी स्वार्थों से सतर्क थीं, इसलिए वे बचत चिंताहरण को सौंपते हुए कहती थीं-**"मेरे पास रहेगा तो रघुनाथ या बहू किसी-न-किसी बहाने हड़प लेंगे। तुम्हारे पास पहुँच जाने पर बचा रहेगा।"**[9]

जब चिंताहरण का अपहरण होता है और अपहरणकर्ता बड़ी धनराशि की माँग करते हैं, तब उनके पुत्रों का उदासीन रवैया अत्यंत पीड़ादायक सिद्ध होता है। वे न केवल किसी प्रयास में रुचि नहीं लेते, बल्कि चिंताहरण की सुरक्षा को लेकर कोई भावनात्मक लगाव भी नहीं दिखाते। यह उपेक्षा अंततः चिंताहरण के जीवन को एक करुण अंत की ओर धकेलती है।

निष्कर्ष

उपन्यास 'चार दरवेश' वृद्धावस्था की सामाजिक, मानसिक और आर्थिक विडंबनाओं का संवेदनशील और यथार्थपरक चित्रण करता है। उपन्यास के चारों वृद्ध पात्र, रामप्रसाद गुप्ता, दिलीपचंद, शिवशंकर और चिंताहरण, अपने जीवन के अंतिम चरण में जिन संघर्षों से गुज़रते हैं, वे केवल व्यक्तिगत त्रासदियाँ नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक असंवेदनशीलता की गवाही भी हैं। इन पात्रों के माध्यम से लेखक ने यह दिखाया है कि आधुनिक

परिवार व्यवस्था में बुज़ुर्गों की भूमिका धीरे-धीरे सीमित होती जा रही है, जिससे वे मानसिक तनाव, अकेलापन, अपमान, असुरक्षा और अस्मिता संकट जैसे गहरे अनुभवों से गुज़रते हैं।

हृदयेश ने संवादों और स्थितियों के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि वृद्धजन केवल शारीरिक रूप से नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक रूप से भी कमज़ोर महसूस करने लगते हैं, जब उन्हें परिवार और समाज से अपेक्षित सम्मान और सहयोग नहीं मिलता। उपन्यास में यह भी दर्शाया गया है कि कैसे बुज़ुर्ग अपने भविष्य की आशाएँ अपनी संतान में देखते हैं और जीवन की भलाई-बुराई को ईश्वर पर छोड़ देते हैं। परिवार में रहते हुए भी जब संबंधों में आत्मीयता नहीं होती, तब वृद्धावस्था वास्तव में जीवन की अंधेरी संध्या बन जाती है।

'चार दरवेश' एक ऐसी कृति है, जो पाठकों को वृद्धावस्था की संवेदनाओं से न केवल जोड़ती है, बल्कि समाज को आत्मविश्लेषण और मानवीय उत्तरदायित्व निभाने की प्रेरणा भी देती है। यह उपन्यास वृद्ध पीढ़ी की आत्मगाथा बनकर वर्तमान समय की जटिलताओं और संवेदनहीनता पर एक गहरा प्रश्नचिह्न खड़ा करता है।

❑❑❑

संदर्भ सूची

1. अउटलुक पत्रिका, नई दिल्ली, 15-मई-2023, पृष्ठ सं- 22, 23
2. पंडित गिरिजाप्रसाद द्विवेदी, मनुस्मृति, नवलकिशोर विद्यालय, लखनऊ, पृष्ठ सं- 44
3. https://sanskritforus.com/abhivadanshilasya-nityam-vridopasevinah/
4. हृदयेश, चार दरवेश, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण-2013, पृष्ठ सं- 16
5. हृदयेश, चार दरवेश, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण-2013, पृष्ठ सं- 120
6. हृदयेश, चार दरवेश, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण-2013, पृष्ठ सं- 153
7. हृदयेश, चार दरवेश, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण-2013, पृष्ठ सं- 33
8. हृदयेश, चार दरवेश, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण-2013, पृष्ठ सं- 33
9. हृदयेश, चार दरवेश, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण-2013, पृष्ठ सं- 62